श्रावण शुक्ल ४, शुक्रवार, दिनांक-२७-०७-१९७९
गाथा-३०८-३११, प्रवचन-७

यह समयसार है। यह सर्वविशुद्ध अधिकार बहुत अपूर्व है। प्रत्येक पदार्थ में पर्याय क्रमबद्ध होती है, उस पर्याय को पर की अपेक्षा नहीं। समझ में आया? जैसे घड़ा-घट उत्पन्न होता है, उसको कुम्हार की अपेक्षा नहीं। है? कर्ता-कर्म का महा सिद्धान्त है यह। **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्ष...** आहाहा! कर्ता का कार्य उसमें अन्य की अपेक्षा ही नहीं। घड़ा होता है तो कुम्हार की अपेक्षा नहीं। बुनकर वस्त्र करता है तो वस्त्र में बुनकर की अपेक्षा नहीं। आहाहा! भाषा होती है, उसमें आत्मा की अपेक्षा नहीं। आहाहा! समझ में आया? यह अक्षर लिखने में आता है, (उसमें) लिखनेवाले की अपेक्षा नहीं। सारी दुनिया की बात क्रमबद्ध में आ गयी है। कर्ता-कर्म महासिद्धान्त है। **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्ष...** अन्य पदार्थ की अपेक्षा नहीं जहाँ। आहाहा! जैसे आत्मा में राग हो तो उसमें कर्म की अपेक्षा ही नहीं और कर्मबन्धन जो होता है, उसके राग की अपेक्षा नहीं। राग उसने किया, इसलिए कर्मबन्धन होता है, ऐसा है नहीं। आहाहा!

यह शरीर चलता है, उसमें आत्मा की अपेक्षा नहीं। आहाहा! आत्मा ने इच्छा की इतनी अपेक्षा से शरीर चलता है, ऐसा है नहीं। रोटी बनती है तो रोटी में स्त्री की या तवे की, अग्नि की अपेक्षा है—ऐसा है नहीं, ऐसे कहते हैं। समझ में आया? यह टोपी जो ऊपर रहती है, उसको शरीर की अपेक्षा नहीं। **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्ष...** है न? आहाहा! सूक्ष्म बात है, भगवान! यह बात भी यथार्थपने न बैठे, उसे अन्तर्मुख होने की योग्यता ही नहीं। आहाहा! समझ में आया? यहाँ कहते हैं, यह हीरे की बात याद आ गयी, शान्तिभाई की। हीरा घिसते हैं न? उनकी दुकान में बहुत २०-२५ लोग घिसते हैं हीरा। झलकते हैं। तो हीरा घिसते हैं और जो उज्ज्वलता (उत्पन्न होती) है, उसको यह घिसनेवाले की अपेक्षा नहीं है। आहाहा! समझ में आया? सब्जी पकती है, उसमें अग्नि की, स्त्री की अपेक्षा नहीं। आहाहा! यह होठ हिलते हैं तो परमाणु कर्ता और होठ उसका कर्म है, उसमें आत्मा की अपेक्षा नहीं। आहाहा! यह चीज़... इस क्रमबद्ध में

यह डाला है क्योंकि प्रत्येक पदार्थ में जिस समय में जो पर्याय होनेवाली होती है तो उसको पर की अपेक्षा नहीं है। आहाहा! समझ में आया?

जगत में किसी भी चीज़ की पर्याय—कार्य, ये पदार्थ का कर्म कहो या कार्य कहो या पर्याय कहो कि उसका—परमाणु का, जीव का कार्य कहो, उस अपनी पर्याय के कार्य में पर की कोई अपेक्षा नहीं है। आहाहा! यह बात बैठना (कठिन) पूरी दुनिया को, हों! ये ऊपर रहा है न? क्या कहते हैं? पासडा(-पांसणी)। पासडा को नीचे के आधार की अपेक्षा नहीं। भबूतमलजी, आहाहा! पासडा जो रहा है... पासडा कहते हैं तुम्हारे में? वौ नीचे की अपेक्षा से रहा है (ऐसा है नहीं)। आहाहा! गजब बात है। भबूतमलजी! गजब बात है! आहाहा! कहते हैं, एक परमाणु गति करता है, पवन आया तो परमाणु—तिनका चलता है, (ऐसा है नहीं)। आँधी होती है न आँधी? उसमें तिनका उड़ता है, वह तिनका उड़ता है तो उसको पवन की अपेक्षा नहीं। आहाहा!

यह पुस्तक बनती है उसको बनानेवाले की अपेक्षा है ही नहीं और पुस्तक बनती है। पण्डितजी बहुत बनाते हैं। आहाहा! यह सिद्धान्त तो सर्वज्ञ परमात्मा त्रिलोकनाथ का सिद्धान्त क्रमबद्ध कहकर... आहाहा! जब जिस द्रव्य की जो पर्याय जिस समय में उत्पन्न होती है, तो उसको पर की अपेक्षा कहाँ रही? हो, निमित्त हो। घड़ा बनने में घड़े को कुम्हार की अपेक्षा नहीं है। कुम्हार हो, परन्तु हो तो उसकी अपेक्षा से घड़ा बना है, ऐसा है नहीं। और बुनकर है बुनकर—वस्त्र-कपड़ा बुननेवाला, उससे कपड़ा बुना (गया) है, ऐसा है ही नहीं। कपड़े की पर्याय के कर्ता-कर्म की अपेक्षा में बुनकर की अपेक्षा है ही नहीं। आहाहा! यह बात...

घर में तिजोरी में पैसा रखते हैं कि कोई न ले जाये तो कहते हैं कि उसमें पैसा रखने की अपेक्षा में किसी की अपेक्षा है नहीं। वहाँ रहने की उसकी योग्यता का कर्ता-कर्म उसमें है। आहाहा! तिजोरी से रहा नहीं। तिजोरी में रखे, उसकी अपेक्षा से वहाँ रहा नहीं। आहाहा! ताला लगाया, कहते हैं, ताला बन्द हुआ, उसको चाबी की अपेक्षा नहीं। पण्डितजी! ऐसी बात है, प्रभु! आहाहा! प्रभु की बात अपूर्व है, नाथ। यह बात कहनेमात्र नहीं, परन्तु अन्तर में यह बात बैठना (कठिन है)। आहाहा! यहाँ तो ऐसे

कहते हैं, भगवान की वाणी कान में पड़ी तो वहाँ ज्ञान की पर्याय उत्पन्न हुई, ऐसी वाणी की अपेक्षा उसको है नहीं। यह पृष्ठ जो है, उसके वाँचने से ज्ञान होता है, यह पृष्ठ, तो कहते हैं कि ज्ञान की पर्याय में पन्ने की अपेक्षा है ही नहीं। ज्ञान की पर्याय कार्य है और कर्ता आत्मा है, यह व्यवहार है। निश्चय से पर्याय कर्ता और पर्याय कार्य है। आहाहा! उसमें—पन्ने में देखने से ज्ञान होता है, यह बात सत्य नहीं है। आहाहा! और पर के समझाने का ज्ञान होता है, उसमें समझानेवाला और वाणी की उसमें अपेक्षा नहीं। आहाहा! कितने में से हठ जाना! आहाहा!

रोटी का टुकड़ा होता है, उसको दाँत की अपेक्षा नहीं। टुकड़ा होता है न दाँत से? यह टुकड़ा होता है, यह कार्य है—रोटी का—परमाणु का क्रम है, उसमें दाँत की अपेक्षा नहीं। आहाहा! और जानने में आता है तो चश्मा निमित्त है और नीचे उतरा तो नहीं जानने में चश्मे की अपेक्षा ही नहीं। आहाहा! समझ में आया?

मुमुक्षु : सर्वथा विपरीत है?

पूज्य गुरुदेवश्री : सर्वथा विपरीत जगत से है, भैया! आहाहा! यहाँ का—दिगम्बर का विरोध आता है, करुणादीप में यहाँ का। एक मन्दिरवासी साधु चन्द्रशेखर मिला था। चन्द्रशेखर है, वह हमारे पास लींबड़ी आया था। कहा, चर्चा करना है। (मैंने कहा), हम किसी से चर्चा करते नहीं। परन्तु ये बात ऐसी कोई है! कहते हैं, वाद-विवाद, ऐसा कोई हो... नियमसार में तो कुन्दकुन्दाचार्य प्रभु कहते हैं, प्रभु! स्वसमय और परसमय साथ में वाद-विवाद नहीं करता। ऐसी चीज अगम्य है कि गम्य करने में कोई वाद-विवाद से गम्य हो जाये, (ऐसा है नहीं)। नियमसार में आता है। वादविवाद... स्वसमय-अपना जैन और परसमय अन्य—उसके साथ वाद नहीं करना।

तो कहा कि हम वाद बिल्कुल करते नहीं। पीछे उठते समय बोले कि इस चश्मे बिना जानने में आता है? कहा, हो गया भाई! वाद। यह सब बात अब करुणादीप में डालते हैं, यह दिगम्बर की बात। लो, चन्द्रशेखर की बात तोड़ देते थे, ऐसा-वैसा... चश्मे से देखने में आता है या नहीं? कहा, हो गयी चर्चा भैया! चश्मा दूसरी चीज़ है और जानने की पर्याय दूसरी चीज़ है। जानने की पर्याय में... क्या कहलाये? चश्मे की

अपेक्षा ही नहीं। तो चढ़ाते क्यों हो? कौन चढ़ाता है? प्रभु! वह चढ़ता है तो अपने कर्ता-कर्म से चढ़ता है, अँगुली से नहीं चढ़ता। आहाहा! अरेरे! नाक के आधार से चश्मा रहा है, ऐसी पर की अपेक्षा नहीं। यह शब्द है? है या नहीं अन्दर? देखो!

कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया (-अन्यद्रव्य से निरपेक्षतया, स्वद्रव्य में ही) सिद्धि होने से... आहाहा! महासिद्धान्त है। हमारे पवैयाजी कहते थे कि क्रमबद्ध की बहुत अच्छी बात आयी। आज सवेरे में पवैयाजी आये थे न? क्रमबद्ध का निचोड़ यह है। समझ में आया? कि प्रत्येक पदार्थ की जो पर्याय जिस समय में—जिस काल में—जन्मक्षण में उत्पन्न होने की है, वह उत्पन्न होगी, उसको पर की अपेक्षा है नहीं। आहाहा! समझ में आया? एक हाथ दूसरे हाथ को छूता नहीं। अपना जो कार्य है यहाँ ऐसा, उस कार्य में अँगुली की अपेक्षा नहीं और अँगुली के कार्य में इस अँगुली की अपेक्षा नहीं। अरर! ऐसी बात! समझनेवाले को जोर आ जाये कि भाषा से लोगों को समझा दूँ... आहाहा! तो कहते हैं कि समझने की पर्याय उसकी है, उसमें तेरी भाषा की अपेक्षा है नहीं। आहाहा!

मुमुक्षु : परस्पर उपकार...

पूज्य गुरुदेवश्री : यह बात निमित्त का कथन है।

'परस्पर उपग्रहो...' आता है न अभी तो सबमें? चौदह ब्रह्माण्ड का (फोटो बना है), नीचे लिखे 'परस्पर उपग्रहो...' सबमें आता है बहुत। ओहोहो! 'परस्पर उपग्रहो...' यह तो ठीक, मोक्षमार्गप्रकाशक के आठवें अध्याय में है। तीर्थंकरों, गणधरों ने भी परोपकार किया है उपदेश देकर, (वही) मैं भी कहता हूँ। यह तो निमित्त का कथन है। मोक्षमार्गप्रकाशक आठवें अध्याय में है। समझ में आया? है यहाँ? यहाँ होगा। यहाँ है। 'मिथ्यादृष्टि जीवों को मोक्षमार्ग का उपदेश देकर उसका उपकार करना, वही उत्तम उपकार है।' देखो! मोक्षमार्गप्रकाशक। यह सब निमित्त से कथन है। समझ में आया? 'श्री तीर्थंकर-गणधरादि भी ऐसा उपाय करते हैं। इसलिए शास्त्र में भी उनके उपदेशानुसार उपदेश देते हैं।' यह व्यवहार का कथन है। मोक्षमार्गप्रकाशक में है।

अरे प्रभु! यहाँ तो कहते हैं कि प्रत्येक द्रव्य की... सुननेवाले को जो (ज्ञान) पर्याय

उत्पन्न होती है, यह पर्याय सुनने की अपेक्षा बिना उत्पन्न होती है। आहाहा! बन्ध अधिकार में लिया है न? कि पर का मोक्ष (करता हूँ) और पर को बन्ध कराता हूँ, ऐसा तुम मानते हो, (लेकिन) उसको अज्ञान से बन्ध होता है और वीतरागभाव से उसका मोक्ष होता है, तो तुम क्या उसको (बन्ध)-मोक्ष करा देते हो? आहाहा! बहुत सूक्ष्म बात! बहुत अपूर्व बात! आहाहा! माला फिरती हैं माला, उसमें मणका (-मोती) जो नीचे उतरता है, उसे अँगुली की अपेक्षा नहीं। समझ में आया? आहाहा! अँगुली से फिरता है, ऐसी पर की—आत्मा की अपेक्षा नहीं है। उसमें आत्मा की अपेक्षा नहीं। यह पर्याय उसके समय में कालक्रमसर—क्रमबद्ध होनेवाला कार्य का कर्ता तो वही परमाणु है। जिसका कार्य देखो, उस कार्य का कर्ता यह है। उस कार्य में दूसरे की अपेक्षा है नहीं। आहाहा! रोटी बनती है, रोटी बनती है... ऐसे-ऐसे बनता है न? महिला (घुमाती है) गोल चक्कर करने को, तो कहते हैं कि उसमें हाथ की अपेक्षा है नहीं। आहाहा!

मुमुक्षु : संयोग से देखता है।

पूज्य गुरुदेवश्री : संयोग से देखनेवाला संयोग से देखता है। उसके स्वभाव से देखे तो उसकी पर्याय उससे हुई है। आहाहा! जगत की दृष्टि संयोग पर है।

जैसे एक लौकी है लौकी, उस पर छुरी पड़ी तो टुकड़ा हुआ, यह भी झूठ है। टुकड़ा होने में छुरी की अपेक्षा है ही नहीं। ऐसी बात... क्या कहते हैं? समझ में आया? आहाहा! कर्ता-कर्म की... करनेवाला और उसका जो कर्म-कार्य, किसी भी पदार्थ का—चैतन्य का या जड़ का... उसमें से ऐसा ही निकला कि आत्मा में जो विकार होता है, तो कर्ता (जड़) कर्म और कार्य विकार—ऐसा है ही नहीं। यह बड़ी चर्चा हुई थी १३ के वर्ष में। नहीं। कर्म के निमित्त बिना विकार होता है? यहाँ कहे कि विकार होने में—विकार के कार्य में कर्ता यह जीव की पर्याय है। पर्याय कहो या जीव कहो। परन्तु उसमें कर्म की अपेक्षा है ही नहीं। आहाहा!

तो यह भी आया कि अपने में ज्ञान का जो क्षयोपशम होता है, ज्ञान की शुद्धि की वृद्धि होती है। भले अज्ञान हो थोड़ा, परन्तु उसमें कर्म के क्षयोपशम की अपेक्षा है नहीं। उसमें आता है या नहीं? पण्डितजी! उसमें यह आया या नहीं? ज्ञानावरणीयकर्म

का क्षयोपशम होता है तो आत्मा में ज्ञान का विकास होता है, ऐसी अपेक्षा है ही नहीं। बडी चर्चा हुई थी १३ के वर्ष में। नहीं, कर्म का उघाड़ हो तो यहाँ (ज्ञान का) क्षयोपशम होता है। कर्म का उदय हो तो यहाँ विभंगावधिज्ञान होता है। कहा, ऐसा है नहीं। ये तो १३ के वर्ष, २२ वर्ष पहले की बात है। हम तो ७१ के वर्ष से कहते हैं, ६५ वर्ष पहले से।

मुमुक्षु : करणानुयोग की भाषा ऐसी है कि ....

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो ऐसा ही कहते हैं। कर्म से विकार होता है और विकार हुआ तो कर्मबन्धन होता है। दोनों आमने-सामने विकार हुआ तो कर्म की अपेक्षा और कर्म का बन्धन हुआ तो राग-द्वेष की अपेक्षा है। परन्तु यहाँ मना करते हैं। विकार हुआ तो कर्म की अपेक्षा है नहीं। **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया...** है? आहाहा!

मुमुक्षु : यह तो द्रव्यानुयोग में लिखा है, करणानुयोग में...

पूज्य गुरुदेवश्री : यही चीज़ है। द्रव्यानुयोग से दृष्टि करे और बाद में तीन योग वांचे तो दृष्टि में बैठे। उसमें लिखा है मोक्षमार्गप्रकाशक में टोडरमलजी ने। द्रव्यानुयोग से दृष्टि मिले वापस, उस दृष्टि के प्रमाण से चरणानुयोग पढ़े तो बैठेगा, नहीं तो नहीं बैठेगा। उसमें है। ये तो ८२ के वर्ष में मिला था मोक्षमार्गप्रकाशक। जब हम पढ़ते थे तो धुन चढ़ गयी थी। खाना-पीना, आहार लेने जाना, किसी (चीज़ की) रुचि नहीं— ऐसा हो गया था। मोक्षमार्ग ८२... ८२। कितने वर्ष हुए? ५३ वर्ष पहले राजकोट में।

मुमुक्षु : कितना आश्चर्य हुआ था, उस समय आपको?

पूज्य गुरुदेवश्री : उससे नहीं, अपनी पर्याय की योग्यता ऐसी थी। आहाहा!

४ वर्ष पहले ७८ में समयसार मिला। ५७ वर्ष हुए। ७८ में... आहा! पहले ७७ में मिला था, हाथ में आया, पश्चात् दे दिया। कहा, पढ़ने का समय नहीं है। ७८ में पढ़ा। समयसार, प्रवचनसार, नियमसार। फाल्गुन मास में। ७८ का फाल्गुन। सभी शास्त्र उपाश्रय में पढ़ते थे। एक बार व्याख्यान देकर हम यही पढ़ते थे। और आठम और पूनम के दिन...

उसमें (स्थानकवासी में) पूनम मानते हैं। आठम और पूनम और आठम और

अमावस मानते हैं। उस दिन उपवास रखते थे। एक महीने में चार चोविहारा। चोविहारा अर्थात् पानी का बूँद नहीं। तो एक व्याख्यान देकर हम तो जंगल में चले जाते थे। ७८ की बात है। सुबह में एक व्याख्यान देकर... उस दिन उपवास रखते थे। आठम और पूनम, अमावस। दो आठम और एक पूनम और अमावस। व्याख्यान देकर जंगल में चले जाते थे। एक मील दूर। कोई मनुष्य नहीं। लाखों गाड़ी मिट्टी निकला एक खड्डा था, उसमें चले जाते थे। अकेले... व्याख्यान के बाद से लेकर शाम को पाँच-छह बजे तक अकेले रहते थे। पानी-बानी पीते नहीं थे, उस समय उपवास। ७८ में पहले समयसार मिला। जंगल में पढ़ा।

ओहोहो! यह चीज.... यह तो मैंने सम्प्रदाय में भी कहा था। शरीर रहित होने की चीज़ हो तो यह है। सब शास्त्र श्वेताम्बर के भले हो, परन्तु शरीर रहित होने की चीज़ तो ये समयसार है। ऐसा भाव अन्दर आना, यह शरीर रहित होने की चीज़ है। आहाहा! यह चीज़ तो निमित्त है। आहाहा! समझ में आया? यह एक शब्द तो गजब काम का है। लालचन्दभाई! **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया...** आहाहा! महासिद्धान्त... आहाहा! डाह्याभाई! आहाहा! किसी भी द्रव्य-पदार्थ की पर्याय जिस समय में होनेवाली (है, वह) होगी, उस कार्य का कर्ता ये द्रव्य है। यह पर्याय का—कार्य का कर्ता द्रव्य है और वह पर्याय कर्म है। ये पर्याय में परद्रव्य की कोई अपेक्षा है नहीं। हो, निमित्त हो। प्रत्येक पदार्थ के कार्यकाल में निमित्त तो होता ही है। अनादि-अनन्त जो द्रव्य की पर्याय होती है, पर्याय अपने से होती है, उस समय निमित्त तो होता ही है, परन्तु निमित्त की अपेक्षा से यह पर्याय हुई, ऐसा है नहीं। आहाहा!

मुमुक्षु : सब निमित्तों को धर्मद्रव्य के समान समझना।

पूज्य गुरुदेवश्री : धर्मद्रव्य कहा न? इष्टोपदेश में आता है। हमारे यहाँ सब बात आ गई है। जैसे (जीव) स्वतन्त्रता से अपनी गति करता है, तो धर्मास्ति को निमित्त कहने में आता है। इष्टोपदेश में ऐसा कहा है। धर्मास्तिकायवत्। सब द्रव्य धर्मास्तिकायवत्... निमित्त कैसा है? धर्मास्तिकायवत् है। यहाँ तो यह कहते हैं कि निमित्त की यहाँ अपेक्षा ही नहीं है। आहाहा! निमित्त हो, परन्तु निमित्त की अपेक्षा पर्याय—कार्य करने में है ही

नहीं। जड़ का और चेतन का जिस समय का कार्य है, उसका कर्ता और कार्य स्वद्रव्य में है। स्वद्रव्य कर्ता और स्वद्रव्य की पर्याय कार्य है। परद्रव्य के निमित्त की अपेक्षा उसमें है नहीं। आहाहा!

यहाँ कलाई में घड़ी रहती है... यह सेठ को देखकर विचार आया। घड़ी रही है, यह कलाई के आधार से रही है—ऐसा है नहीं। हाथ के आधार से रही है, यह है ही नहीं। आहाहा! लकड़ी का सहारा लेते हैं वृद्ध लोग... यह है न? तो (लकड़ी) जमीन को छूती है? कि नहीं? जमीन को छूती ही नहीं। हाथ में पकड़ी है तो हाथ भी लकड़ी को छुआ ही नहीं। आहाहा! संयोग से देखते हैं, ये संयोग (दृष्टि) के कारण से दिखता है। आहाहा!

मुमुक्षु : आप कहते हो तो मानना ही पड़ेगा।

पूज्य गुरुदेवश्री : ऐसा नहीं। धन्नालालजी ठीक कहते हैं। न्याय से जैसा है, ऐसा मानना पड़ा। न्याय अर्थात् 'नि' धातु है। 'नि' धातु (का अर्थ) वस्तु का जैसा स्वरूप है, उस तरफ ले जाना उसका नाम न्याय। न्याय से समझना। ऐसे कहते हैं तो मान लेना, ऐसा नहीं। न्याय में 'नि' धातु है। 'नि' धातु का अर्थ ये है कि ले जाना। ऐसी चीज है उस तरफ ज्ञान को (ले) जाना उसका नाम न्याय। प्रत्येक चीज़ अपने समय में आगे-पीछे हुए बिना अपने काल में पर्याय होती है, उस पर्याय को परद्रव्य की अपेक्षा बिल्कुल किंचित् होती नहीं। आहाहा! कपूरचन्दजी! ऐसी बात है।

भगवान के दर्शन करने से शुभभाव होता है, उसकी मना करते हैं यहाँ। शुभभाव होता है, उसमें भगवान के निमित्त की अपेक्षा नहीं। आहाहा! गजब बात है! यह वस्तु का स्वरूप ऐसा है। कोई भगवान ने बनाया नहीं। जैसा है, वैसा कह दिया, (भगवान) कर्ता नहीं। आहाहा! भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है तो दिव्यध्वनि का कार्य भगवान का है ऐसा भी नहीं। भगवान की दिव्यध्वनि 'भविजन जोग...' आता है न वह? 'भवि भागन वचन योग...' यह भी निमित्त का कथन है। 'भवि भागन वचन योग...' यह निमित्त का कथन है। वाणी के काल में परमाणु की पर्याय भाषारूप होने की थी, उस पर्याय को आत्मा की अपेक्षा नहीं और सुननेवाले की भी अपेक्षा नहीं। आहाहा! ऐसी बात है, प्रभु! तेरी प्रभुता का पार नहीं। आहाहा!

यहाँ अपने में सम्यग्दर्शन जब होता है तो उसमें राग और निमित्त की अपेक्षा नहीं। कर्ता-कर्म... कर्ता आत्मा और सम्यग्दर्शन पर्याय कार्य, यह भी व्यवहार है। बाकी पर्याय कर्ता और पर्याय कार्य है, उसमें निमित्त की अपेक्षा नहीं। आहाहा! कि गुरु मिले, और तीर्थंकर मिले, इसलिए सम्यग्दर्शन हुआ। आहाहा! देशनालब्धि मिलने से ज्ञान होता नहीं। देशनालब्धि के काल में जो पर्याय हुई, वह तो परलक्ष्यी ज्ञान है, वह भी देशना शब्द से हुआ नहीं। उस समय में परलक्ष्यी इतना विकास होने का पर्याय का काल था, तो ऐसा हुआ है। आहाहा!

यहाँ तो जहाँ हो वहाँ हम करते हैं... हम करते हैं... सम्पूर्ण व्यवस्था हम करते हैं... पूरे दो करोड़ रुपये... भभूतमलजी... आहाहा! ये तो दृष्टान्त है। ५० करोड़ रुपये का (आसामी) आया था न हमारे पास मुम्बई में? चिमनभाई का सेठ वैष्णव है। पचास करोड़। परन्तु स्त्री (-पत्नी) श्वेताम्बर जैन है। लड़के आदि सब सभी वैष्णव, उसकी सब स्त्रियाँ जैन श्वेताम्बर। आया था। विनती भी की थी, महाराज! हमारे घर पर पधारो। सबका भाव है। गये थे। १५०० रुपये रखे थे। पहले आये थे व्याख्यान में तब हजार रुपये रखे थे। होनेवाले, रहनेवाले परमाणु वहाँ रहे, जहाँ जाना है, वहाँ जाता है। वह कहे कि मैंने दिये और दूसरा कहे, मेरे को मिला, (झूठ है)। अरे रे! बहुत अन्तर है भाई! वीतरागमार्ग। आहाहा!

पैसे की पर्याय... शास्त्र में आता है, मोक्षमार्ग प्रकाशक में भी आता है। साता वेदनीय के उदय से शरीर मिले, संयोग अनुकूल मिले—ऐसा आता है। ये निमित्त से बात है। उसमें निमित्त कौन था?—(इतना बताना है)। बाकी शरीर में रोग होता है, ये असाता के उदय से (होता है), यह निमित्त का कथन है। रोग होता है शरीर की पर्याय में, उसमें असाता के उदय की अपेक्षा नहीं। आहाहा! डाह्याभाई! चतुराई उड़ जाये ऐसा है। दुनिया के चतुराई उड़ जाये ऐसा है। आहाहा! पैसा लेना-देना, मैं पैसा दे सकता हूँ... पैसे का कर्ता-कर्म तो पैसा (स्वयं) था। पैसे का परमाणु कर्ता और जाने की क्रिया उसका कार्य है। देनेवाला ऐसे माने कि मैंने दिया, मिथ्याभ्रम है। आहाहा!

आगे पैसेवाले बैठे हैं। यह सेठ पैसेवाले हैं। भभूतमलजी, कपूरचन्दजी हैं।

बहुत लाखोंपति हैं। बहुत लाखोंपति हैं। थोड़े लाखोंपति ऐसे नहीं। ज्ञानचन्दजी! तुम्हारी इज्जत तो बहुत है वहाँ।.... सेठ बड़े पैसेवाले हैं। पैसेवाला आत्मा है? कितना वाला है? एक वाला निकले पैर में, तो शोर मचाये। आहाहा! पानी खारा बहुत हो, ...का पानी हो तो वाला निकलता है। यह तो कितने वाला? पैसेवाला, स्त्रीवाला, कुटुम्बवाला, इज्जतवाला, लड़केवाला, लड़कीवाला, जमाईवाला। कितने वाला? आहाहा! किसका पुत्र, किसका पिता? प्रभु ऐसे कहते हैं। बाप की पर्याय का कर्ता बाप का आत्मा है, लड़के की पर्याय का कर्ता उसका आत्मा है। तो लड़का उसका कहाँ से आया? और लड़के का बाप... परन्तु बाप आया कहाँ से? प्रभु! ऐसी बात है, भाई! बाहर में तो सुनने मिलती नहीं। सेठ दरकार छोड़कर चले आये, सम्प्रदाय की दृष्टि रखे तो यह सके नहीं। ऐसी तो बात चलती नहीं वहाँ। यहाँ का विरोध करते हैं। अरे प्रभु! ये बात हमारे घर की नहीं, ये वस्तु का स्वरूप है। आहाहा!

प्रत्येक पदार्थ में जिस समय में पर्याय उत्पन्न (होने) का काल है, उस समय में उत्पन्न होगी। निमित्त होता है, परन्तु निमित्त से उत्पन्न हुई, ऐसी अपेक्षा है नहीं। आहाहा! तत्त्वार्थराजवार्तिक में भी ऐसा आया है। एक कार्य में दो कारण हैं।— उपादान, निमित्त। तत्त्वार्थराजवार्तिक में है। एक कार्य में दो कारण हैं—उपादान और निमित्त। यह तो निमित्त का ज्ञान कराया है। बाकी उपादान की पर्याय होने में कोई निमित्त की अपेक्षा है ही नहीं। समझ में आया? तो अभी पण्डित ऐसे कहते हैं कि प्रत्येक पदार्थ में उपादान की अनेक योग्यता हैं, परन्तु जैसा निमित्त मिले, वैसा कार्य होता है। अरर! नहीं तो एकान्त है... एकान्त है... ठीक प्रभु! यह क्रमबद्ध में डाला है। क्रमबद्ध की विशेष पुष्टि का कारण यह है। आहाहा! यह शब्द उसमें डाले हैं, उसका कारण है कि जिस पदार्थ की जिस समय में पर्याय उत्पन्न होगी, उसमें उत्पाद्य—उत्पन्न होनेयोग्य और उत्पादक दूसरी पर(चीज़) ऐसा है ही नहीं। ये आ गया है। उत्पाद्य-उत्पादक। ऊपर। है न?

जीव अपने परिणामों से उत्पन्न होता है, तथापि उसका अजीव के साथ कार्यकारणभाव सिद्ध नहीं होता, क्योंकि सर्व द्रव्यों का अन्यद्रव्य के साथ उत्पाद्य-उत्पादकभाव का अभाव है। है? प्रत्येक द्रव्य की पर्याय में पर्यायरूपी उत्पाद्य और

निमित्त उत्पादक—ऐसा अभाव है। आहाहा! बहुत कठिन अपूर्व बात है, प्रभु! वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा त्रिलोकनाथ की यह दिव्यध्वनि है। आहाहा! अभी तो बहुत गड़बड़ हो गयी है। ऐसा होता है... ऐसा होता है... व्यवहार से निश्चय होता है... आहाहा! यहाँ तो कहते हैं कि अपनी निश्चय पर्याय स्वद्रव्य के आश्रय से हुई है, उसका कर्ता आत्मा और कर्म निर्मल पर्याय—धर्म है, उसमें राग की या पर की अपेक्षा है ही नहीं। आहाहा! व्यवहार राग की मन्दता थी, तो निश्चय सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ, (ऐसा अज्ञानी मानते हैं)। क्योंकि जब सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है तो उसके पहले शुभभाव (होता है)। अशुभभाव हो और पश्चात् समकित होता है, ऐसा होता नहीं। क्या कहा? जब सम्यग्दर्शन उत्पन्न होता है, तब उसके पहले शुभभाव ही होता है। अशुभभाव हो और समकित दर्शन हो, ऐसा (होता) नहीं। क्योंकि मैं आनन्द हूँ, शुद्ध हूँ, ऐसा विकल्प आया—यह शुभभाव है। शुभभाव है तो सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ, ऐसा है नहीं। सम्यग्दर्शन उत्पन्न होनेयोग्य—उत्पाद्य और राग-विकल्प उत्पादक (अर्थात्) उत्पन्न करानेवाले—ऐसा है नहीं।

ये इतने में लिखा है। भाई आये हैं या नहीं आये? ज्ञानचन्दजी नहीं आये। भाई कहते थे कि आनेवाले हैं। नहीं आये। दिख नहीं रहे। आनेवाले थे। बहुत नरम व्यक्ति हैं ज्ञानचन्दजी। नरम व्यक्ति। हुकमचन्दजी, ज्ञानचन्दजी, बाबूभाई उनका प्रभावना में बहुत हाथ है, निमित्त है।

मुमुक्षु : निमित्त से काम होता नहीं।

पूज्य गुरुदेवश्री : जहाँ-जहाँ प्रभावना की पर्याय होनेवाली है, वहाँ निमित्त कहने में आता है, परन्तु निमित्त की अपेक्षा प्रभावना की पर्याय में नहीं। आहाहा! है या नहीं उसमें? देखो! **कर्ता-कर्म की...** किसी भी पदार्थ में पदार्थ कर्ता होकर कर्म अर्थात् पर्याय का कार्य हुआ, उस समय के कार्य में **अन्यद्रव्य से निरपेक्षतया, स्वद्रव्य में ही...** परद्रव्य की अपेक्षा नहीं और अपने स्वद्रव्य में सिद्धि होने से स्वद्रव्य की पर्याय, वह पर्याय कार्य और स्वद्रव्य उसका कर्ता (ऐसा) व्यवहार है। बाकी पर्याय कार्य और पर्याय कर्ता, यह स्वद्रव्य में है। परन्तु पर्याय कार्य और निमित्त कर्ता, ऐसी कोई चीज़

है नहीं। आहाहा! समझ में आया? ये दो अधिकार लिये हैं, (एक) क्रमबद्ध लिया है, (दूसरा) शुद्धभाव अधिकार। ४५ वर्ष हुए यहाँ। ४५ वर्ष में शिक्षण शिविर... ४५ वर्ष, यहाँ आने (के बाद) ४५ वाँ चातुर्मास हुआ। ४५—४ और ५। (संवत्) १९९१ में आये थे, (संवत्) ९१ फाल्गुन कृष्ण तीज, तुम्हारी चैत्र कृष्ण तीज। तो यहाँ ४४ वर्ष के ऊपर चार मास हो गये। यहाँ तो शिक्षण शिविर हर वर्ष चलता है। कहा, ४५ वर्ष हुए और बहुत लोग आये हैं। यह बात प्रभु! अन्तर में बैठनी (चाहिए), भाषा से नहीं। आहाहा!

मुमुक्षु : सब बात तो सोनगढ़ से निकाली है। यह बात आपने सोनगढ़ से निकाली है।

पूज्य गुरुदेवश्री : यह निमित्त से कथन है। बात तो ऐसी है। समझ में आया? गये थे वहाँ, वर्णीजी के साथ चर्चा बहुत हुई थी। नहीं तो वर्णीजी तो दिगम्बर सम्प्रदाय में बड़े इज्जतदार हैं। उनको भी ये बात नहीं मिली थी। क्रमबद्ध नहीं। क्रमबद्ध है सही, परन्तु इस पर्याय के पीछे यही पर्याय होगी—ऐसा नहीं। कहा, नहीं, इस पर्याय के बाद यही पर्याय होगी, ऐसी क्रमबद्ध की व्याख्या है। बहुत (लोग) बैठे थे, सब थे। हमारे रामजीभाई थे, बंसीधरजी थे, कैलाशचन्दजी थे। यात्रा गये थे न पहली बार १३ के वर्ष में। आहाहा!

यहाँ तो कहते हैं कि भगवान के दर्शन से शुभभाव हुआ, ऐसा है नहीं। उस समय में शुभभाव होने के क्रम में आनेवाली पर्याय है। निमित्त—भगवान के दर्शन से शुभभाव हुआ, ऐसा है ही नहीं। आहाहा! ऐसी बात। यह सब ऐसा मानने के बाद कोई करेगा नहीं। परन्तु करता है कौन? मात्र उसकी समझण में अन्तर है। बाकी तो होनेवाली (है वह) होगी पर्याय। समझ में अन्तर है। मैं भगवान का दर्शन करता हूँ, दर्शन किया तो मुझे शुभभाव हुआ। घर पर स्त्री के पास थे, तब शुभभाव क्यों नहीं था? यहाँ मैं आया, भगवान का दर्शन किया तो शुभभाव हुआ। झूठ बात है। और स्त्री के पास था, तब अशुभभाव था, यह स्त्री के कारण से हुआ? निरपेक्षतया अशुभभाव तेरे से हुआ है। पर की अपेक्षा है ही नहीं। आहाहा! पण्डितजी! ऐसी बात है, प्रभु!

अलौकिक बात है। इस एक शब्द में तो पूरे बारह अंग का सार है। आहाहा!

क्रमबद्ध की सिद्धि में यह आया है। प्रत्येक द्रव्य की पर्याय उस समय में क्रम से होनेवाली है, तो किसी निमित्त की अपेक्षा उसको नहीं, उसमें यह आया है। आहाहा! **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया...** प्रत्येक पदार्थ में जिस समय में जो पर्याय होती है... यहाँ तो निर्मलता की बात है क्रमबद्ध में। निर्मल पर्याय जो होती है, उसमें कर्ता आत्मा और निर्मल पर्याय कर्म है। कर्म का क्षयोपशम हुआ तो समकित हुआ, ऐसा है नहीं। समझ में आया? ज्ञान में हीनाधिकता होती है... यह चर्चा हुई थी वहाँ। पुस्तक में है। उसने पुस्तक छपाया है। जमादार है न बाबू? कौन? बाबूलाल जमादार। वर्णीजी ने यहाँ का विरोध किया था न? यह छापा है कि देखो! वर्णीजी भी ऐसे कहते हैं। यात्रा में गये थे पहले, उस वक्त भी कहा था कि जिस समय में पर्याय होगी, उसको निमित्त की, पर की अपेक्षा है नहीं। अपने में... विकार का प्रश्न हुआ था। विकार है, उसमें कर्म के निमित्त की अपेक्षा है नहीं। देखो! संस्कृत टीका पंचास्तिकाय ६२ गाथा। पर कारक की अपेक्षा है ही नहीं। ऐसा संस्कृत है पण्डितजी! पर कारक की—कर्ता-कर्म की कोई अपेक्षा है ही नहीं। विकार होने में भी कर्म की अपेक्षा नहीं, तो प्रभु! धर्म की पर्याय होने में पर की अपेक्षा तो है ही नहीं। आहाहा! ऐसी बात है। कठिन बात लगे।

मुमुक्षु : वे तो विरोध करने के लिये वर्णीजी की प्रतिष्ठा का फायदा उठाते हैं बाबूलाल।

पूज्य गुरुदेवश्री : हाँ, उठावे। देखा है। मार्ग तो यह है। आहाहा! यह तो ढिंढोरा पीटकर कहने में आता है। अन्दर लिखा है या नहीं? क्रमबद्ध की पुष्टि में ये बात ली है।

पहले शुरु किया है कि प्रत्येक जीव और अजीव अपने समय में उत्पन्न होनेवाली पर्याय का उत्पादक है, पर नहीं। और यह भी उसी समय में, आगे-पीछे नहीं। किसी द्रव्य की पर्याय आगे-पीछे कर सके ऐसा (होता नहीं)। स्वद्रव्य भी ऐसा न कर सके। परद्रव्य की तो अपेक्षा नहीं, आहाहा! परन्तु स्वद्रव्य भी पर्याय आगे-पीछे कर सके,

ऐसा वस्तु का स्वरूप नहीं। आहाहा! क्रमबद्ध का निर्णय करने में यह सार आया है। उसका सार यह आया है। समझ में आया? ५ + ५ = २५, योगफल (-परिणाम) क्या आया? २५ आया। ऐसे ये क्रमबद्ध का योगफल (-सार) क्या? परमाणु जड़ और चैतन्य... लाख, करोड़, अनन्त परमाणु हैं और अनन्त आत्मा हैं... निगोद के जीव में भी कर्म से हीन दशा हुई, ऐसा है नहीं।

निगोद के जीव में... ऐसे कहते हैं कि जब तक ऐकेन्द्रिय जीव है, इसलिए कर्म का जोर है। मनुष्यादि होता है, पश्चात् आत्मा का जोर चलता है। यहाँ तो कहते हैं कि प्रत्येक समय में अपनी पर्याय का कर्ता आत्मा है। निगोद में भी... निगोद समझे? लहसुन, प्याज, काई (आदि) अनन्त जीव हैं। अनन्त जीव में प्रत्येक जीव के दो-दो शरीर हैं—तैजस, कार्मण। अँगुल के असंख्य भाग में अनन्त जीव हैं, उसमें अनन्त शरीर भी हैं। एक परमाणु की पर्याय दूसरे परमाणु को निमित्त हो, परन्तु ये निमित्त की अपेक्षा से परमाणु में पर्याय हो, ऐसा है नहीं और कर्म के उदय से निगोद की पर्याय हुई, ऐसा भी नहीं। आहाहा!

निगोद की पर्याय जो हुई, वह उसी समय होनेवाली थी, यह पर की अपेक्षा बिना (हुई है)। पर के कर्ता-कर्म की अपेक्षा बिना उस पर्याय का कर्ता जीव है और यह पर्याय उसका कार्य है। आहाहा! गजब बात, भाई! मोक्षमार्गप्रकाशक में ऐसा आया है कि नदी में चलते पानी का बहुत जोर हो तो रोक नहीं सकता आत्मा। नदी का दृष्टान्त है। यह तो निमित्त का कथन है। बाकी उस समय भी पानी के प्रवाह में... आहाहा! ऐसा शरीर चलता है, वह अपनी पर्याय से अपने कर्ता-कर्म से चलता है, पानी के कारण से नहीं। आहाहा! एक ब्रह्मचारी था तो मोटर में बैठा था। मोटर में बैठा तो ऐसा कहा कि सोनगढ़वाले ऐसा कहते हैं कि हम मोटर से नहीं चलते। मोटर चलती हो और अन्दर बैठे हो... मोटर चलती हो तो शरीर चलता है, ऐसा है ही नहीं। अन्दर शरीर की गति करने में मोटर की अपेक्षा है ही नहीं। यह बात...

मोटर में बैठे हैं... मोटर चलती है... मोटर पहिये से चलती है, ऐसी अपेक्षा भी नहीं।

मुमुक्षु : पेट्रोल से तो चलती है।

पूज्य गुरुदेवश्री : पेट्रोल से चलती नहीं। नाम सोनगढ़ का देते हैं कि सोनगढ़ की मोटर पेट्रोल के बिना चलती है—ऐसा सब लोग कहते हैं। यह बात अपूर्व है। और अपनी मोटर पेट्रोल से चले। यहाँ कहते हैं कि पेट्रोल की पर्याय का कर्ता पेट्रोल है। मोटर चलती है, उसका कर्ता मोटर का परमाणु है। पेट्रोल से मोटर चलती है, यह बात सत्य है नहीं। यह बात बाहर आयेगी। सोनगढ़ की मोटर पेट्रोल बिना चलती है। अरे! सोनगढ़ की मोटर है ही नहीं। मोटर मोटर की है। आहाहा! मोटर की चलने(रूप) पर्याय जो होती है, उसमें ड्राईवर का कारण—अपेक्षा नहीं। उसके नीचे है... क्या कहलाये? पहिया। उसको भी मोटर की अपेक्षा नहीं। मोटर में बैठे हैं और मोटर चलती है तो शरीर ऐसा गति करता है, ऐसा भी नहीं। शरीर की पर्याय का कर्ता उस समय में शरीर का परमाणु है। अन्दर में बैठे हैं तो मोटर से शरीर चलता है, ऐसा भी नहीं। अरे गजब! सोनगढ़ का नाम लेकर कहते हैं लोग। आहाहा! क्या कहते हैं? देखो न!

कर्ता-कर्म की... कोई भी द्रव्य कर्ता होकर कार्य उस समय में होता है, उसमें **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया...** अन्य द्रव्य की अपेक्षा नहीं। परपदार्थ की उसमें अपेक्षा है नहीं। आहाहा! रोग होता है और दवा से मिटता है, ऐसी अपेक्षा है नहीं—ऐसा कहते हैं। अरे! गजब बात है। आयुर्वेद का लिया है तत्त्वार्थराजवार्तिक में। आयुर्वेद की दवा से मिटता है... दवा से मिटता है—ऐसा है नहीं। यह तो व्यवहार से कथन किया है। आहाहा! शरीर में—परमाणु में रोग जो होता है तो असाता के कारण से हुआ है, ऐसा नहीं। असाता जड़(कर्म) दूसरी चीज़ है और यह दूसरी चीज़ है। रोग होने में असाता के उदय की अपेक्षा ही नहीं। आहाहा! ऐसी बात सुनना कठिन पड़े।

कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया... यह तो महासिद्धान्त है। चौदह ब्रह्माण्ड का सिद्धान्त है। आहाहा! अनन्त तीर्थंकर, अनन्त केवली, अनन्त सन्त, अनन्त समकिती ने इस प्रकार से मानकर दुनिया को ऐसा कहा है। 'कहा है' यह कार्य का कर्ता भी वाणी है। आहाहा! **कर्ता-कर्म की अन्यनिरपेक्षतया (अन्यद्रव्य से निरपेक्षतया...** पर की

अपेक्षा बिना प्रत्येक द्रव्य की पर्याय स्वद्रव्य से होती है। है ? **स्वद्रव्य में ही सिद्धि होने से...** उस द्रव्य की पर्याय उस द्रव्य में अपने से सिद्धि होने से... आहाहा! **जीव के अजीव का कर्तृत्व सिद्ध नहीं होता।** जीव अजीव का कार्य करे ऐसा सिद्ध नहीं होता। जीव अपनी पर्याय को करे और पर की भी करे, (ऐसा माने) तो दो क्रियावादी मिथ्यादृष्टि होता है। समयसार में आता है... समयसार में आता है। अपनी पर्याय भी करे और पर की भी करे, एक द्रव्य दो क्रिया करे, (ऐसा माने) तो मिथ्यादृष्टि है। अज्ञानी है। जैन की खबर उसको नहीं। विशेष कहेंगे।

(**श्रोता :** प्रमाण वचन गुरुदेव!)